

हृन्निधीयागिनष्ट कस्मात्समायुक्ता ॥

१६ नमाधीमहासुखवयाय कर्तुमनुगच्छ सकलनिवसय हृदुनिधा
लाविष्वाद्यानीनायिद्वयसु समसुखविलसं लिङ्गवृथमिच्छरको ना
नासागाधिवार विविधिनययदा गकिनीवद्धखण्डुतु त्वविष्वा
रुष्टुवनगदगलेश्वरावधयुनाद्या १ ॥ यतखद्यानद्यानद्युः
वृद्धनिगद्युना ध्यावशामान्यनवध्यानध्यानीधमान उमगिद्वे

दृष्टविष्वागन्धसिद्धिकायालमालं विकृतनवगिवासेनवकीर्तिः
वृथगतुल्यमातुनृष्टुलिमलिनविर्ता योयुवासेनवधु २ ॥
यकल्ययिङ्गलाय श्रुटविकटकटा वद्धदूटगगङ्गी संकटयिङ्ग
नर्त विकटदृष्टिमुखी खड्गखद्यानीहसं मृगुयाग्लिचक्रमुख
नृष्टमलुकी मकरिनी कसासायगर्वाभातुसध्या सगनयविबुधा याद
वासेनवधु ३ ॥ कष्टवृक्षानुलिङ्गागिनिगलधनवामरुष्टु
यालं यदिसिमाविर्गय गवद्विचनवसा यावुताहसवर्मा गद्वु गीः

लिराया प्रगलितदशनं नायूर्यं यद्विपुलि सुहृन्नुदागि किमववगिगिनि
सुगाशेनवावयुनायु ॥ ३ ॥ थला लालातर्जु गधितगवगिनि ४/ शुलिम
वालनाई निर्दिने क्रतुमाला यत्तययनिकना आधिरुषाविष्णवीयायुः
हामावक कममिलितकना गधययुहसं थगतुगातुयु विगुतिव
नयनं यायुवासेनवन्द ४ ॥ ४ ॥ मागामागध्वमस्त्रिकटिगनुधिर्न दि
ल्लरस्माद्दहं सुथासिन्नसूकजं गधितगवगिना थगतयद्वानिमाला ५
कासादृहासा युगदशनगता कालगच्छान्धकारं नूर्यं गुयायुवासेनवन्द
४ ॥ ५ ॥ यागानं समूलं सकलदशादिगं यत्तकैयस्य सारवा ४ गतः

स्का सावधुदागियुगितवलना विन्दुमालावर्लवा आनूय गहस्य ४
कृयविवदविध वालनायकयाता ४ कोठं गधितगवगिना सकलकल्लयः
नं लाललीलाकनागि ॥ १ ॥ यागालमकवीनं सुनववनमिर्गं धूल
घाईहर्सी यायुहामदृहाणं विदसरयकनं सूर्यकाटियुसार्वं सध
ल्लनकनूर्यं सयविमिगिगणं गधिसंहातकना सार्यं गधितगवगिना सय
मयहनयुसेनवामावयुकी ॥ ६ ॥ गधितगवगिना सयसमाय ४ ॥

[illegible]

गयी ० कृष्णस्मिन् ॥ दुर्गमाष्टादिभक्तानाम् मन्दलान्ककलायुग्म ॥ अथ वरुचः
निनावरुं लयविष्णुमकावणी ॥ मर्गलात्वं महावीर्यं कावणी ० माष्टुन ॥
यवीजा लम्बनमायुः पूषुवा ० अष्टाष्टुर्वि ॥ त्वं वकाभध्वनी कान्थागिणी का
मत्रुयक ॥ माया त्वं जेववी गकि ० नायकायी ० यष्टुम ॥ काला त्वं वडडिन्याः
अष्टयी ० अष्टभस्वनी ॥ त्वं वयी ० अष्टयी ० वृत्वं माया कममष्टुर्ल ॥ यष्टुयुग
वमष्टुर्ल यष्टुव कलमागनी ॥ माष्टुसायक ० अष्टुगायवी यष्टुगिगियति
वृगा ॥ त्वं वमाष्टुकिनी माया अष्टुमयानिभजरा ॥ किष्टुनी जालद्यावाष्टु
वनायट्टुदृदरिष्टा ॥ विष्टामष्टुमसंष्टु विष्टागमसमाष्टुन ॥ विष्टकानमन

मन्त्र मातृमन्त्र नूयिथ ॥ नैका नासनमावृष्ट विन्दूयति घागता ॥ कौकाजी जन
नीदवी कौ कौ कौ कावरुदनी ॥ वायका वायका वल्लु यौ नां लावा निवासिना
॥ रुमरु मावगादवी हंसिना हंसमग ॥ हंसनाद स्वगी राश वक्रय ह जूष्मा
सुख ॥ पुरुग विमल माग यमयज्ञान वल्लु ॥ वक्रयुय सुयुय व नैका
शी ४ समयावृण ॥ कौका नयि युग वलि कौ कौ मन्त्र नूयिथ ॥ माका वृयध
नीदवी जगजिह्व गथ ध्वनी ॥ त्वमव विद्युर्जिह्वा व कौ कौ कौ रगा इवस्य ॥
हव इव रुवा नाग युग्यु युग्यु वद ॥ यग्न मय दमावृष्ट यद त्याग मस
कम ध्वनी ॥ पुष्प ध्वन सुपुष्प ध्वन ४ पुष्पिण वधु नाधिथ ॥ अमन न्ध व निनान

न्य अमन कर्म दूयित ॥ नैका नयार्थि वीवाक्षी सुकाय र्वव वृवी ॥ नैका
प्रख्यं कल नोदी सुकाय र्वव वृणी ध्वनी ॥ नैका नयार्थि कानन्दा नित्यो नन्द
यदनगा ॥ माया र्व सर्व सिद्धाना सीसुतो वेडम ध्वनी ॥ समान यवमसाथ म
गिवमग नध्वनी ॥ समाना भवमसाथी सबजिवा न नालथ ॥ वयम दिव्य गकि
शुक्ल मानक सुखे वासथ ॥ सबोद्ध पुन्द नी कौ न डावना जी गम ध्वन ॥ नैका
नैका कानमर्क सुवलथ श्रुत सजग ॥ मन्त्रा वेसयद र्गमेनी गन्धान वसम
धिग ॥ कलमार्ग गिणी वक्र विवाद वानिकुदिक ॥ युग्यु वला गिरा को ना ४ युग्यु
वन्द्य गगनना ॥ सफा र्वि सयद रुद ४ अकारि सयद रुव १ ॥ वक्रण यकि काका

ला, ॐ श्रुतीकलमाधुन ॥ सिद्धाय श्रुतयुथन, कमलकमल ४ ध्वनी ॥ बृहत्स
 समुद्रं, हिसमलुलद्विभ ॥ साममलुलमधु ॥ सायातीमूर्धमलुल ॥ त्विमधि
 मन्दलानक ॥ सायातीमूर्धमलुल ॥ त्विमधिमलुलानक ॥ दिकिडिधमदध्वनी ॥
 वायुवंगमनाग ॥ यनायनाविसयिभ ॥ शुन्यशून्याकनावस, सावरीसिद्धयवि
 भ ॥ निनालीयगमदवा, अकाणगुनगिकम ॥ हूनविहूनगमसीध, गयीयुयव
 वल ॥ स्मिगिलियकवधवी, जननीगत्वमलुल ॥ गत्वानादीरुनीगकि ४, अहान
 न्दविशदनी ॥ मागनीसर्वधवानी, समयागवियडम ॥ विध्वध्वनीजगद्वाणी
 सद्यदाययदायनी ॥ नमस्कयनमनिर्वाण, जगद्यानिसहाविक ॥ सनर्त्तस

तयैवृध्वश्रुनममविगह ॥ शुद्धाययनसार्की, सायातीविदगनयि ४ ॥ ॐ
 गिसायासर्वथाकी, थागीयगिकमागरी ॥ गस्यावगर्नकवर्ग, वकिकाया ० धव
 ॥ शुखीमाथायसर्वलि ४, अवस्कानरवत्तन ॥ सर्वयायविनिर्म्मीका, रवर्ग
 क ॥ दयी ॥ नगस्ययूनवावर्क, सायासुवसूदीन ॥ ॐ ४ वयावृयाश्री
 गान्, लारीयूजायसधिय ॥ अवस्काकस्मैयूकस्य, योनीयुर्ननगस्यवा ॥ समा
 वायययूकस्य, गीयाह्मसिधवर्त्तन ॥ ॐ निमायासुवाधिका, नानामानन्द, मन्त्र
 महासायासुवसमाक ४ ॥ ॥

लयसंज्ञा न कार्गी कालवृथिनी ॥ उत्तमलक्ष्मणदेव्या लक्ष्मणदेव्या नमः ॥
 उत्तमलक्ष्मणदेव्या ॥ ४ ॥ देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥
 मवपुष्पासारनी ॥ कया लक्ष्मणदेव्या देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥
 देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥
 ४ ॥ नकासं संहिता देवी चामुण्डाथनवाहनी ॥ खड्गकृतलज्जितुमश्च खर्वांगकर्म
 पुकी ॥ यवायुस्थानिता देवी उद्युक्ता द्विकर्णनीयवर्जश्च लथय देवी कदम्बवृक्ष
 वाणिनी ॥ देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥
 ॥ देवी काष्ठवृक्षगण लक्ष्मीवर्णिवाहनी ॥ धूना देवि नमः ॥ देवि नमः ॥ देवि नमः ॥
 देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥

देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥

चनी ॥ वृष्टवृक्षनिवाणिन्या संहलक्ष्मणदेव्या लक्ष्मणदेव्या नमः ॥
 नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 वल्लभयशस्वरुणा यावन्ननागयुजा ॥ विना चान्नवदुर्मखीष्टुं रुकनी सोम्या कृता सा
 सती ॥ वन्दतामति हानरुन्मगमनी सत्कृणु लामणिता ॥ १ ॥ नागनागयुत्रविना
 दिवस्त्रनमस्त्यमहिमलुल ॥ लाकार्नीरुयकाविनी विनयना विक्षेपि शूलायुध ॥ स
 शाश्वतमलालनीलकटिला लालालिकालेवृता ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥ देवदेवि नमः ॥

धृतावतानोमिता ॥ २ ॥ इन्द्रिनात्रुलविग्रहानिरुयद्रुहनावलीनाडिनासवृण
किधनाविमृकिंकवनीरुका नदागधदा ॥ नन्दनोयूलनीलेकण्ठगमनीनाल
कनगास्वजाकोमालीनलनागकाननवनेवकास्वनागाडगा ॥ ३ ॥ श्यामंता
उर्जंगरागगगिनागीघानगधमुनिचर्वोवात्रुगदामडाठमधनंशखीससाक
यर्थायस्यारुगिकनजगत्तिगकथंवीगास्वनामोमितास्वधूमस्त्रिवथेक
विजयकथेनाह्वाविधंसनी ॥ ४ ॥ वावाहीववदाववाहवदनाईदुपरातास्व
नाकथाकाश्रनकिंकिनीमूनलीतशदायमानानूताइवस्यामवयू४०गेविरा

रुगामनीचकद्वगाविहगायायात्यून्यविवर्द्धनीयुतिदिनंयूतानिचयश्रिता ॥
५ ॥ मथेनावरयष्टगमधुरमुखीनानागुल्ललंकृतावदीवोत्रिविनाडिनीधुतवि
नयस्याकृताश्रुगुरुसारानुचिनातनादशगर्तभगात्रिगमिडिगादवीगीनवः
रातनाशनकनीयायात्यदानोमिता ॥ ६ ॥ वामुल्लुयवनायवन्दवानिताचयी
चयलुयराजनकावर्द्धशिनात्रुहाननसिनमालागिरकंधनमोमिनादोस
प्रक्षटकधनीरुसाधनूकलिकायाथगासनसीकृताडलवलागसनसह
वदा ॥ ७ ॥ यायश्मननगमिनीगिनयनीकुन्दद्ववशुगुन

[illegible]

स्वप्नरुटकधान्गि ॥ अदमालात्रवर्गनागवृक्षसवारकी ॥ अजिगादवीमहामाया
 इन्द्रादिवानमाश्रुग ॥ अजिगा ॥ ९ ॥ अगणीपूव्यसर्कासंखप्नरुटकधान्गि
 स्वर्गसंमुखलक्ष्मि विन्दुपार्श्वसंसारिणी ॥ अयनाजितामहादवी नमोऽयं गमीरु
 गा ॥ अयनाजिगा ॥ १० ॥ नीलात्यलनिरादवी जसुनीशुरकावणी ॥ स्वप्नरुटक
 स्वर्गगदाहस्ताश्रुशारिणी ॥ वनदारयरुक्ष नमोऽयं गमीरु ॥ जसुनि
 ॥ ११ ॥ मयकाश्रुनवर्णरा ॥ स्वप्नरुटकधान्गि ॥ स्वर्गसंमुखलक्ष्मि वनदाया

यक्षलनी ॥ सर्वलोकालक्ष्यामी गम्भीरनीदवी नमो ॥ बभ्रुनि ॥ ६ ॥ नीलाश्रुता-
 दवी स्वप्रभुष्टकध्वजनी ॥ जायामालासखद्वर्गनागयूथसयात्रकी ॥ यगस्कवलिमंत्राय
 नमामीमाहनीगिवा ॥ माहनी ॥ ७ ॥ धृष्टवन्दनिसादवी स्वप्रभुष्टकध्वजनी ॥ जायामा-
 लासखद्वर्गनागयूथसयात्रकी ॥ अक्षकषणसदानाति यगस्कवनमा ॥ ८ ॥ अक्ष-
 र्वणी ॥ ९ ॥ तुंगिजयादि ॥ १० ॥ नमो ॥ महार्णववाय ॥ वामद्वानस्यवाय-
 नकयिलकन वृत्तमानकवकी ॥ शुद्धद्वन्द्वजगद्गुह्यममणिवणिना मालिकायूकणी-
 री ॥ हस्तसंयूकध्वजवनमयिसहिर्गकर्लिवाणिसदृशी वामाशार्णवकी नमयिनि
 यसदा रुद्रकीर्णनवारवी ॥ ११ ॥ वामद्वानस्यनागसमगतयनमिन्द्रवर्णकवकीर्णन

धनुः स्यात्मानं जलधिकलघुर्न यागदुर्गा कृष्ण ॥ दक्षदुर्गा वरुणं यूनवियुनिहर्तः
 रुतर्कवामयाणि मूष्मद्यायधिद्वयं नमयितुं पुरंदी वरुणार्द्धसूक्तं ॥ १ ॥ नृका
 स्यं कृष्णवर्णं स्वगवनिगमनं वज्रहस्ताग्निदक्ष्णादपुंश्चटववामं गयनयनधर्व
 पुमालाचिर्गव ॥ सर्वालं कालद्वयं धृगमकृत्तजटनृत्यमानं संहर्तुं वगालं वा
 वियूरय निहर्तुं नोमिष्टीं नवाखी ॥ २ ॥ धिर्गं वा रुष्ट्यास्यं वसुधुजदधृतीं रुष्ट्या
 लाहिद्वयं कर्णार्द्धं नृत्यमानं त्वग्निषवसधृतीं यागमोनुपदधीं वामदक्षदक्षान् रु
 लकधृगधनूं मधुवीनाकलं य नोमिष्टीं रुष्ट्यास्यं वसुधुजदधृतीं रुष्ट्या

[illegible]

॥ १ ॥ अथ गुरुयश्च वक्त्रं दंष्ट्रकं रुजधनेऽध्वगवर्णं भूलाभरी । दक्षवाणी वस्वर्वांग
सगद्गुणकली शक्तिधूलिसकाशं ॥ वासकाद मधुं यूनने विनियतं श्वटकीया
सविन्दुः । दक्षगुणिरामवृषं गुयनयनयुगं नृस्यमानन्नमर्कं ॥ २ ॥ ध्यामि मधुमिदं
वै विधिवदनकली चैकवक्त्रं निभर्तुं । खड्गं वक्त्रं सुदक्षं धृगवन्विदिगी वासकं
चक्षरवै । दक्षगुणिरामकारवी रुद्रागमणि रूपं लंकागुरुयसिद्धानानामा यन्धि
तगु सकलयविनर्ग नृस्यमानं नमामी ॥ ३ ॥ हंसगुरुयसीर्ग गुयनेयनवर्धद
हंसकवक्त्रं । खड्गं वक्त्रं सुदक्षं धृगवन्विदिगी रुद्रकायसुवामि नाना लंकायुक्ती

डस्युजकार्नायगियालकानां सामान्यगत्वकृतथावनानां दशास्यनादुस्यद्वन
 स्यनाहो८कवाडुभर्किरागवानुकलशशा
 (६) लीरुलादिनास्तुल मिथिक्केलादिसर्वशः ॥ अमुगाठिस्वजान्तीन
 जूनमहानसीदिवी प्रसेषयद्रि८समस्विगृ८मयानीवादिनीरव्या साड
 गायनमश्वनी ॥ यिवनुदतासर्व नूडा (६) वविनायका ॥ यागिनी
 व १० द्रववालाश्च समक्षयवस्त्रिगा ॥

५ नगायनमाः पूर्वा कृपागायत्रीपाका पूर्यामिनमः
 मायलासनाय नमाः वावडु कनाथानमा
 पुतासनाय नमाः यासर्व जागिन नमा
 मिथिवाप्रय नमाः
 मृशासनाय नमाः ५ समस्तपुत्रय नमाः

3658

नैव द्वाणा यधुकाय वन सहिता राजा वसाह म्बनी क्रोम नानि सि गवक म्बनी नानि
 आवर्जी वावाही कलमारव कथ्य कथितं सहि क्कान्ति न्बनी वसाह म्बनी
 द्वाणा यधुकाय वन सहिता राजा वसाह म्बनी क्रोम नानि सि गवक म्बनी
 नवर्नी मी ससि नी क्ववी सा द्वादी यून क्कान्ति न्बनी वसाह म्बनी
 गय क्कान्ति न्बनी सानन्द कारी सदा उत्थ न्बनी वसाह म्बनी
 सता व्रेता च गवक नानि वल सहिता सुवर्धनी साद्विदा ॥

३३ नैव द्वाणा यधुकाय वन सहिता राजा वसाह म्बनी क्रोम नानि सि गवक म्बनी

योजिनी क्कान्ति न्बनी वसाह म्बनी

ASHA ARCHIVES

ध्वज नमस्तस्मै नाधिक यः श्री श्री गुरु हास म हा क थु ~~मै~~ श्री का ध म हा र्थ न वा य श्री
वै कृती य नाम्ना अलिवलि विणिर्गु म हा य जा वलि गुरु ~~मै~~ शि दि क नृ श हा
~~मै~~ ७ ~~मै~~ ~~मै~~ ~~मै~~ ~~मै~~ ~~मै~~ श्री काला र्था य ~~मै~~ श्री म
गा व नि द वी म स कि म य वि वा ना यः वा नृ थ का ~~मै~~ ला क ल म हा म्म सा ना धि
क य श्री श्री ज य नि म हा क थु ~~मै~~ श्री उ न्न न म हा र्थ न वा य श्री वा ना दि य
नाम्ना अलिवलि विणिर्गु म हा य जा वलि गुरु ~~मै~~ शि दि द हि श म हा ~~मै~~
~~मै~~ ८ ~~मै~~ ~~मै~~ ~~मै~~ ~~मै~~ ~~मै~~ श्री कला लि ना य ~~मै~~ का व

वि द वी म स कि म य वि वा ना य सहि ना य वा य व ल क्षी व न म हा म्म सा ना धि
क य श्री श्री व वि रु म हा क थु ~~मै~~ श्री क था वी म हा र्थ न वा य श्री वै ~~मै~~ द्वा य नि
य नाम्ना अलिवलि विणिर्गु म हा य जा वलि गुरु ~~मै~~ शि दि द हि श म हा ~~मै~~
~~मै~~ ९ ~~मै~~ ~~मै~~ ~~मै~~ ~~मै~~ ~~मै~~ श्री च क था दा य ~~मै~~ श्री क म ला
व नि द वी म स कि म य वि वा ना सहि ना यः श्री उ र्ध्व न क न क म हा र्थ न वा य म हा
म्म सा ना धि क य श्री श्री च का म म हा क थु ~~मै~~ श्री रि व न म हा र्थ न वा य श्री वै

कृद्वि कायेऽद्वये नवाय वलिष्टं १२ श्राव ॥ ८ ॥ ~~विंश~~ यवर्मस्तु नः
 ख्यायं तुं द्वा ला किलि किलार्थं नडा किं वायु कृद्वि काये नवाय वलि
 स्टं १२ श्राव ॥ ९ ॥ ~~विंश~~ यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः
 लनाती द्वियेनी काये को यय कृद्वि काये अद्वये नवाय वलिष्टं १२ श्राव ॥
 १० ॥ ~~विंश~~ यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः
 न कृद्वि काये अद्वये नवाय वलिष्टं १२ श्राव ॥ ११ ॥ ~~विंश~~ यवर्मस्तु नः
 वलिष्टं ॥

नैज गजा म्वाइकी ॥ ~~विंश~~ तुं द्वा य द्वा हस्मा ययु माधियनय वलिष्टं १२ श्राव
 नैज गजा म्वाइकी ॥ ~~विंश~~ यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः
 नमद्विवा म्वाइकी ॥ ~~विंश~~ यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः
 ननवाइनायवाइकी ॥ ~~विंश~~ यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः
 नमकला म्वाइकी ॥ ~~विंश~~ यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः
 नसृग म्वाइकी ॥ ~~विंश~~ यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः
 न अश्वा म्वाइकी ॥ ~~विंश~~ यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः यवर्मस्तु नः

यवर्मस्तु नः

१५ यन्मात्रायदाइका वलि
 १६ गिरात्रायदाइका वलि
 १७ महिषायदाइका वलि
 १८ धुम्नायदाइका वलि
 १९ निधुम्नायदाइका वलि
 २० अश्विनीयदाइका वलि
 २१ अश्विनीयदाइका वलि

जसासवथागिनिथावलि	जसाहजिय
जयाय वलि	जकनिय वलि
विजयाय वलि	जकनिय वलि
जुजिनाय वलि	जकनिय वलि
जुवनाजिनाय वलि	जकनिय वलि
जुमरुनि वलि	जकनिय वलि
जुमरुनि वलि	जकनिय वलि

१. ज उ उ ग्री व पु अ य वलि
 २. ज म मृ ग्री व पु ना लिक य वलि
 ३. ज ङ ग्री व पु अ य वलि
 ४. ज ङ ग्री व पु व गि य वलि
 ५. ज उ उ ग्री व पु दू या य वलि
 ६. ज ङ ग्री व पु मि व सि का य वलि
 समायाह ० द व ल शी या इ का वलि ०

युक्तमनाथः प्रगुक्कयादिभ्यः निवर्तननिमित्तं
 त्वाथर्हदमया प्रष्टुं प्रदीयन् यथादिभ्यः निवर्तननिमित्तं
 उक्तं मन्त्रं लल्लखत्वादिभ्यः महादावनाद्यधनयश्च मन्त्रं नदां मन्त्रं
 प्रवर्तयन् धनं नः लालीसर्वादिभ्यः सिद्धिदं यत्स्वस्वम् ३ रुठवलि ४ रुठं
 धारा ॥ जथायवदधिधानं ॥ विष्णु ॥ ३

जनमः श्रीकृष्णाय नमः यदयं महामाया भगवत्पुत्र
वैष्णवि कुरु शङ्ख उवाच ॥ हृदि ब्रह्म विद्यते न विधिः ।

